लोकगीतों पर फिल्म एंव मीडिया का प्रभाव

डॉ. अरुणा

सहायक आचार्य (विद्या संबल योजना)
राजकीय महाविद्यालय पाटोदी (बाड़मेर)

भूमिका–

परिवर्तन सृष्टि का नियम है और अनवरत होने वाले परिवर्तनों के कारण ही आज हम समाज का यह विकसित रूप देख पा रहे हैं। समय के साथ–साथ रीति–रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं में भी परिवर्तन होते रहे हैं। आज का युग वैश्वीकरण एवं बाजारवाद का युग है और भाषा, कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में भी बाजारवाद वैश्वीकरण का बहुत प्रभाव पड़ा है। पिछले कुछ दशकों में लोक संस्कृति के सभी पहलुओं जैसे संगीत, चित्रकला, स्थापत्य, मूर्ति, आदि कलाओं तथा साहित्य से लेकर सामान्य खान–पान, रहन–सहन, काम–काज, रीतिरिवाज, भाषा–बोली सभी क्षेत्रो में व्यापक बदलाव देखे गये हैं।

भारत लोकगीतों की अति प्राचीन परंपरा रही है और जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के हर पड़ाव पर लोकगीत गाये जाते हैं। आज होली, दीपावली, रक्षा बंधन, छठ पूजा और हर तरह के पारिवारिक उत्सवों पर लोकगीत गाने की परम्परा रही है और लोकगीतों की वजह से भी त्योहारों का अपना महत्व बन जाता है। इन लोक गीतों में छिपे हुए मतलब को जानने के बाद सुनने में और भी मज़ा आता है। लोकगीतों के बारे में सामान्य तौर पर सोचा जाता है कि किसी क्षेत्र विशेष की बोली, परम्परा और त्यौंहारों की संस्कृति का दर्पण है परन्तु आज लोकगीतों का स्वरूप बदल चुका है और मीडिया और सिनेमा का व्यापक असर लोकगीतों पर देखने को मिल रहा है।

परम्परागत एवं नवीन लोकगीतों में संबंध–

विकास की दौड़ में आज गांव और शहर के बीच की दूरी तेजी से कम हो रही है और गांव तेजी से कस्बों और कस्बे तेजी से छोटे–छोटे शहरों में परिवर्तित होते जा रहे हैं। शहरीकरण का सबसे विपरित प्रभाव सामान्य ग्राम्य जीवन पर पड़ा है। टेलिविजन के प्रसार से आज गांवों से चौपालें लुप्त होती जा रही है और लोगों की सांझ चौपालों की अपेक्षा टीवी कार्यक्रमों तक सिमट कर रह गई है। आज भी गांवों में, पर्वतों एवं वन्य क्षेत्रों में बिखरे लोक जीवन में लोकगीतों की महक बाक़ी है और उसे सहेजने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है।

शहरों में तो लोकगीत लगभग अपना अस्तित्व खो चुके हैं। दिनभर की भाग–दौड़ से थकाहारा कर घर लौटा व्यक्ति लोकसंगीत ही नहीं संगीत से भी दूर होता जा रहा है। महानगरीय संस्कृति में लोकगीतों की संस्कृति पूरी तरह विलुप्त होती जा रही है। परिवारों का लगातार विघटन हो रहा है परिवार केवल पति–पत्नी और

बच्चों तक ही सीमित हो गया है। पारिवारिक रिश्ते अपना माधुर्य खो चुके हैं। जहां एक ओर ग्राम्य जीवन में आपसी रिश्तों और संबंधों के खट्टे–मीठे अनुभवों को लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था वहीं शहरी जीवन में तो ये रिश्त–नाते अपनी प्रासंगिकता खोते जा रहे हैं।

आज के आधुनिक युग में परिस्थितियां बहुत बदल गई है तथा आज ग्रामीण युवा वर्ग लोकगीतों को सुनने के बजाय फिल्मी संगीत को ज़्यादा महत्व देता है। यही कारण है कि आज विभिन्न अवसरों पर परम्परागत लोकगीतों की अपेक्षा चारों तरफ फिल्मी धुनों पर आधारित लोकगीत सुनाई देने लगे हैं। आज लोकगीतों के शब्द और संगीत दोनों में तेजी से परिवर्तन हुआ है। लोकगीतों के नाम पर फुहड़ संगीत पर आधारित लोकगीत सुनाई देने लगे हैं। इस परिवर्तन का कारण मुख्य रूप से आज जनमानस पर मीडिया और फिल्मों का तेजी से बढ़ता हुआ प्रभाव ही है। जहां एक ओर पहले ग्रामीण क्षेत्रों में परम्परागत घडुवा, बैंजू, ढोलक, मृदंग, पखावज, नक्कारा, सारंगी एवं इकतारा आदि वाद्य यंत्रों के साथ लोकगीत गाये जाते थे वहीं आज का लोकगीत आधुनिक इलैक्ट्रॉनिक वाद्ययन्त्रों के साथ गाये जा रहे हैं।

लोकगीतों की परम्परा में आये तीव्र बदलाव का मुख्य कारण जहां एक ओर मीडिया और फिल्मों का बढ़ता प्रभाव है तो वहीं दूसरी ओर समय अभाव के कारण भी रीति–रिवाज और रस्में तेजी से सिमटती जा रही है और इसके साथ ही लोकगीतों का दायरा भी तेजी से सिमटता जा रहा है। राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में कई जातियां जो परम्परागत रूप से विभिन्न अवसरों पर गायन का कार्य कर रही थी, लोकगीतों के सिमटे दायरे के कारण उनका जीवनयापन करना भी मुश्किल हो रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में लोकगीतों के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। लोकगीत सामान्यतः क्षेत्रीय भाषाओं और संगीत पर आधारित होते हैं उनके गायन के समय पारम्परिक वाद्य यन्त्रों का उपयोग किया जाता है तथा लोकगीतों पर स्थानीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। परन्तु समय के साथ लोकगीतों पर मीडिया एवं फिल्मों के प्रभाव के कारण शब्दों में भी परिवर्तन होने लगा नई धुनों पर बनने वाले लोकगीतों के भाषायी अभिव्यक्ति प्राचीन लोकगीतों से काफी भिन्न है। राजस्थान राज्य में लोकगीतों के दो रूप देखने को मिलते हैं पहला जो उसका प्राचीन स्वरूप जो आज भी दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता है तथा दूसरा लोकगीतों का फिल्मी रूप जिसमें राजस्थानी लोकगीतों को आधुनिक संगीत की धुनों पर ढाला गया है। प्राचीन लोकगीतों और उस पर बने आधुनिक लोकगीतों या फिल्मी गीतों में कहीं–कहीं शब्दों और धुन दोनों में परिवर्तन देखने को मिला है तो कहीं केवल धुन में परिवर्तन किया गया है लेकिन गीत के शब्द वही है।

लोकगीतों पर फिल्म एंव मीडिया का प्रभाव–

वर्तमान समय में लोकगीतों की परम्परा का सबसे अधिक ह्रास विवाह आदि से संबंधित गीतों का हुआ है। विवाह के अवसर पर लड़के और लड़की की सगाई होने से लेकर विवाह और विदाई के मध्य बहुत सारी रस्में निभाई जाती थी और प्रत्येक रस्म के लिए एक अलग से लोकगीत होता था। ग्रामीण क्षेत्रों में विवाह की समय कुआं पूजन, सूर्य पूजन, पेड़–पौधों और तालबों आदि का पूजन, घर में आंगन लीपना और रिश्तेदारों को बुलावा भेजने का सिलसिला आरंभ हो जाता था। विवाह के काफी दिन पूर्व ही महिलाएं जिस घर में विवाह होता था वहां एकत्रित हो जाती थी और लोकगीत गाते हुए विवाह की तैयारियों में अपना सहयोग देती थी। विवाह के अवसर पर पारम्परिक रूप से तैयार किये गये बन्ने एवं बन्नी गीत गाये जाते थे। लेकिन आज माहौल बदल चुका है विवाह की रस्में तेजी से सिमटती जा रही है और विवाह के अवसर पर लोकगीतों की जगह फिल्मी गानों ने ले ली है। विवाह के अवसर पर एक महिला संगीत का आयोजन कर दिया जाता है जिसमें केवल लोकगीतों की अपेक्षा केवल फिल्मी गीतों पर फूहड डांस देखने को मिलता है। बहुत कम घरों की शादियों में आज लोकगीत सुनने को मिल रहे हैं। गांवो में ये परंपरा अभी तक कुछ बची हुई है, लेकिन शहरों में लोकगीतों की परम्परा लगभग समाप्त हो चुकी है । सभी को मिल कर इस धरोहर को बचाने के प्रयास करने चाहिए।

लोकगीत या लोकसंगीत पर सबसे अधिक प्रभाव फिल्मों का पड़ा है। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों से लोकसंगीत से जुड़े बड़ी संख्या में लोग आज बॉलीवुड की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। विशेष रूप से पंजाब, राजस्थान और हरियाणा जैसे राज्यों से कई 220 लोक कलाकर बॉलीवुड में अपनी धाक जमा चुके हैं। इन लोक कलाकारों के साथ ही लोकगीतों का प्रभाव भी बॉलीवुड में देखने को मिल रहा है। लोकगीतों और लोकधुनों पर बने फिल्मी गानों को लोगों ने काफी पसंद किया है।

आज सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि मीडिया और फिल्मों का असर आदिवासी संस्कृति पर भी पड़ा रहा है। आदिवासियों की अपनी एक अलग संस्कृति और पहचान रही है। आदिवासी क्षेत्रों की अपनी ही एक लोक संस्कृति होती है तथा उनके रीति–रिवाज, रस्में, मान्यताएं बिल्कुल भिन्न होती है। आदिवासी क्षेत्रों में लोकगीत मनोरंजन का सबसे सरल साधन माना जाता है। आदिवासी क्षेत्रों के लोकगीत एवं उन पर किये जाने वाले लोकनृत्यों की अपनी एक अलग पहचान है। परन्तु आदिवासी संस्कृति भी आज के आधुनिक संगीत के प्रभाव से अछूती नहीं रह सकी और आज आदिवासी क्षेत्रों में भी फिल्मी धुनों और संगीत पर आधारित लोकगीत सुनने को मिल जाते हैं। आदिवासी बहुल जिलों के अनुसूचित जनजाति के लोगों के गीत, उनकी धुनें तेजी से लुप्त हो रही हैं क्योंकि आदिवासी अंचल में भी पाश्चात्य संस्कृति व आधुनिकता की घुसपैठ हो गई है।

निष्कर्ष–

वर्तमान बाजारवाद और वैश्विीकरण के वातावरण में मानव की दिनचर्या को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। मानव जीवन में आए सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव लोक संस्कृति पर पड़ा है। यही कारण है कि आज लोकगीत की प्राचीन परम्परा जिसके रचनाकार अज्ञात होते थे और केवल मौखिक रूप से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्वाभाविक रूप में हस्तानान्तरित होते रहते थे, में अमूलचूल परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। लोक साहित्य को संरक्षित करने के उद्देश्य से प्राचीन लोकगीतों को लिपिबद्व किया जा रहा है जिसके साथ ही प्राचीन लोकसंगीत के संरक्षण एवं संवर्द्धन के भी प्रयास किये जा रहे हैं ताकि प्राचीन लोकगीतों के लय एवं धुनों को भी संरक्षित किया जा सके। आज देश में तीव्र गति से शहरीकरण हो रहा है और छोटे–छोटे शहरों के स्वरूप में परिवर्तन के साथ ही बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों से भी लोग शहरों की ओर आकृष्ट हो रहें है। यही कारण है कि आज जहां ग्रामीण क्षेत्रों में लोकगीतों की महत्ता यद्यपि कुछ कम हुई है लेकिन फिर भी वे प्रासंगिक बने हुए है लेकिन शहरों में लोकगीत का वजूद लगभग समाप्त होने की दिशा में है। आज धार्मिक लोकगीत जो श्रद्धा और आस्था पर परिपूर्ण होते थे उन पर फिल्मी संगीत का गहरा प्रभाव पड़ा है। मेले एवं धार्मिक आयोजन वृहद् स्तर पर आयोजित होने लगे हैं और इन अवसरों पर प्राचीन लोकगीतों को भारी आधुनिक संगीत के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है लोकगीतों के बोल पूरी तरह बदल चुके हैं। बोलों में न तो वह देशकाल और वातवारण है और ना वह शैली फिर कैसे हो सकती है लोकगीतानुसार लोक अभिव्यक्ति।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. विद्या चौहान, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा।
2. सूर्यकरण पारीक, राजस्थानी लोकगीत ।
3. नारायण सिंह भाटी, राजस्थानी लोकगीत, परम्परा 2013।
4. डॉ. जगदीश नारायण भोलानाथ, हरियाणवी लोकगीतों का सामाजिक पक्ष।
5. डॉ. तेजनारायण लाल, मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन।
6. सत्यव्रत सिन्हा, राजस्थान की रसधारा।
7. डॉ. बापूराव देसाई, लोक साहित्य, विनय प्रकाशन।
8. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका।